इकाई - IV

13. संघर्ष के कारण मैं तुनुकमिज़ाज हो गया : धनराज

SCERT TELANGANA

प्रश्न :

1. ध्यान चंद के बारे में आप क्या जानते हैं?
2. हॉकी को भारत का राष्ट्रीय खेल क्यों कहा जाता है?
3. हॉकी के कुछ खिलाड़ियों के नाम बताइए।

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

हॉकी के सुप्रसिद्ध खिलाड़ी धनराज पिल्लै जब पैतींस वर्ष के हो गए, उनका एक साक्षात्कार विनीता पाण्डेय ने लिया था। इस साक्षात्कार का संपादित अंश यहाँ दिया जा रहा है।

विनीता– खिड़की, पुणे की तंग गलियों से लेकर मुंबई के हीरानंदानी पवई कॉम्प्लेक्स तक आपका सफ़र बहुत लंबा और कष्टसाध्य रहा है। उस सफ़र के बारे में कुछ बताएँ।

धनराज– बचपन मुश्किलों से भरा रहा। हम बहुत गरीब थे। मेरे दोनों बड़े भाई हॉकी खेलते थे। उन्हीं के चलते मुझे भी उसका शौक हुआ। पर, हॉकी-स्टिक खरीदने तक की हैसियत नहीं थी मेरी। इसलिए अपने साथियों की स्टिक उधार माँगकर काम चलाता था। वह मुझे तभी मिलती, जब वे खेल चुके होते थे। इसके लिए बहुत धीरज के साथ अपनी बारी का इंतज़ार करना पड़ता था। मुझे अपनी पहली स्टिक तब मिली, जब मेरे बड़े भाई को भारतीय कैंप के लिए चुन लिया गया। उसने मुझे अपनी पुरानी स्टिक दे दी। वह नयी तो नहीं थी लेकिन मेरे लिए बहुत कीमती थी, क्योंकि वह मेरी अपनी थी।

मैंने अपनी जूनियर राष्ट्रीय हॉकी सन् 1985 में मणिपुर में खेली। तब मैं सिर्फ़ 16 साल का था–देखने में दुबला-पतला और छोटे बच्चे जैसा चेहरा...। अपनी दुबली कद-काठी के बावजूद मेरा ऐसा दबदबा था कि कोई मुझसे भिड़ने की कोशिश नहीं करता था। मैं बहुत जुझारू था–मैदान में भी और मैदान से बाहर भी। 1986 में मुझे सीनियर टीम में डाल दिया गया और मैं बोरिया-बिस्तरा बाँधकर मुंबई चला आया। उस साल मैंने और मेरे बड़े भाई रमेश ने मुंबई लीग में बेहतरीन खेल खेला–हमने खूब धूम मचाई। इसी के चलते मेरे अंदर एक उम्मीद जागी कि मुझे ओलंपिक (1988) के लिए नेशनल कैंप से बुलावा ज़रूर आएगा, पर नहीं आया। मेरा नाम 57 खिलाड़ियों की लिस्ट में भी नहीं था। बड़ी मायूसी हुई। मगर एक साल बाद ही ऑलविन एशिया कप के कैंप के लिए मुझे चुन लिया गया। तब से लेकर आज तक मैंने पीछे मुड़कर नहीं देखा।

विनीता– आपका विद्यार्थी जीवन कैसा रहा? अपने स्कूल के दिनों से आपकी किस प्रकार की यादें जुड़ी हैं?

धनराज– मैं पढ़ने में एकदम फिसड्डी था। किसी तरह दसवीं तक पहुँचा, मगर उसके आगे तो मामला बहुत कठिन था। एक बात कहूँ–अगर मैं हॉकी खिलाड़ी न

SCERT TELANGANA

धनराज पिल्लै के व्यक्तित्व को रेखांकित करते हुए विनीता पाण्डेय ने लिखा है–'वह आपको कभी हँसाता है, कभी रुलाता है, कभी विस्मय से भर देता है, तो कभी खीझ से भी। उसके व्यक्तित्व में कई रंग हैं और कई भाव। उसने ठेठ ज़मीन से उठकर आसमान का सितारा बनने की यात्रा तय की है।'

होता तो शायद एक चपरासी की नौकरी भी मुझे न मिलती। आज मैं बैचलर ऑफ़ साइंस या आर्ट्स भले ही न होऊँ पर गर्व से कह सकता हूँ कि मैं बैचलर ऑफ़ हॉकी हूँ। (हँसते हुए)...और मेरी शादी के लिए आप मुझे मास्टर ऑफ़ हॉकी कह सकते हैं।

विनीता– आप इतने तुनुकमिज़ाज क्यों हैं? कभी-कभी आप आक्रामक भी हो जाते हैं!

धनराज– इस बात का संबंध मेरे बचपन से जुड़ा हुआ है। मैं हमेशा से ही अपने आपको बहुत असुरक्षित महसूस करता रहा। मैंने अपनी माँ को देखा है कि उन्हें हमारे पालन-पोषण में कितना संघर्ष करना पड़ा है। मेरी तुनुकमिज़ाजी के पीछे कई वजहें हैं। लेकिन मैं बिना लाग-लपेट वाला आदमी हूँ। मन में जो आता है, सीधे-सीधे कह डालता हूँ और बाद को कई बार पछताना भी पड़ता है। मुझसे अपना गुस्सा रोका नहीं जाता। दूसरे लोगों को भी मुझे उकसाने में मज़ा आता है। मुझे ज़िंदगी में हर छोटी-बड़ी चीज़ के लिए जूझना पड़ा, जिससे मैं चिड़चिड़ा हो गया हूँ। साथ-ही-साथ मैं बहुत भावुक इनसान भी हूँ। मैं किसी को तकलीफ़ में नहीं देख सकता। मैं अपने दोस्तों और अपने परिवार की बहुत कद्र करता हूँ। मुझे अपनी गलतियों के लिए माफ़ी माँगने में कोई शरम महसूस नहीं होती।

विनीता– आपके परिवार की आपके लिए क्या अहमियत है?

धनराज– सबसे अधिक प्रेरणा मुझे अपनी माँ से मिली। उन्होंने हम सब भाई-बहनों में अच्छे संस्कार डालने की कोशिश की। मैं उनके सबसे नज़दीक हूँ। मैं चाहे भारत में रहूँ या विदेश में, रोज़ रात में सोने से पहले माँ से ज़रूर बात करता हूँ। मेरी माँ ने मुझे अपनी प्रसिद्धि को विनम्रता के साथ सँभालने की सीख दी है। मेरी सबसे बड़ी भाभी कविता भी मेरे लिए माँ की तरह हैं और वह भी मेरे लिए प्रेरणा-स्रोत रही हैं।

विनीता– आपने सबसे पहले कृत्रिम घास (एस्ट्रो टर्फ़) पर हॉकी कब खेली?

धनराज– मैंने सबसे पहले कृत्रिम घास तब देखी जब राष्ट्रीय खेलों (नेशनल्स) में भाग लेने 1988 में नयी दिल्ली आया। मुझे याद है कि किस तरह सोमय्या और जोक्विम कार्वाल्हो मुझे एक कोने में ले जाकर कृत्रिम घास पर खेलने के गुर बता रहे थे। और जब वे बताने में लगे हुए थे, मैं झुक-झुककर उस मैदान को छू रहा था। मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि विज्ञान इस कदर तरक्की कर सकता है, जिससे कृत्रिम घास तक उगाई जा सके!

विनीता– हर युवक का यह सपना होता है कि उसके पास एक कार हो। आपके पास अपनी पहली कार कब आई?

धनराज– मेरी पहली कार एक सेकेंड हैंड अरमाडा थी, जो मुझे मेरे पहले के इम्प्लॉयर ने दी थी। तब तक मैं काफ़ी नामी खिलाड़ी बन चुका था। मगर यह कोई ज़रूरी नहीं कि शोहरत पैसा साथ लेकर आए! मैं तब भी मुंबई की लोकल ट्रेनों और बसों में सफ़र करता था।

SCERT TELANGANA

क्योंकि टैक्सी में चढ़ने की हैसियत मुझमें नहीं थी। मुझे याद है, एक बार किसी फ़ोटोग्राफ़र ने एक भीड़ से भरे रेलवे स्टेशन पर मेरी तसवीर खींचकर अगली सुबह अखबार में यह खबर छाप दी कि 'हॉकी का सितारा पिल्लै अभी भी मुंबई की लोकल ट्रेनों में सफ़र करता है।' उस दिन मैंने महसूस किया कि मैं एक मशहूर चेहरा बन चुका हूँ और मुझे लोकल ट्रेनों में सफ़र करने से बचना चाहिए। लेकिन मैं कर ही क्या सकता था? मैं जो भी थोड़ा बहुत कमाता, उससे अपना परिवार चलाना पड़ता था। धीरे-धीरे पैसे जमा करके बहन की शादी की और अपनी माँ के लिए हर महीने पुणे पैसा भेजना शुरू किया। आज मेरे पास एक फ़ोर्ड आइकॉन है, जिसे मैंने सन् 2000 में खरीदा था। मगर वह किसी कॉरपोरेट हाउस का दिया हुआ तोहफ़ा नहीं, बल्कि मेरी मेहनत की गाढ़ी कमाई से खरीदी हुई कार है।

विनीता– सफलता का आपके लिए क्या महत्त्व है? हॉकी को आपने इतना कुछ दिया, इसके बदले आपको क्या मिला?

धनराज– कुछ रुपये ईनाम में मिले थे, मगर आज खिलाड़ियों को जितना मिलता है, उसके मुकाबले में पहले कुछ नहीं मिलता था। मेरी पहली ज़िम्मेदारी थी परिवार में आर्थिक तंगी को दूर करना और उन सबको एक बेहतर ज़िंदगी देना। विदेश में जाकर खेलने से जो कमाई हुई, उससे मैंने 1994 में पुणे के भाऊ पाटिल रोड पर दो बेडरूम का एक छोटा सा फ़्लैट खरीदा। घर छोटा ज़रूर है पर हम सबके लिए काफ़ी है। 1999 में महाराष्ट्र सरकार ने मुझे पवई में एक फ़्लैट दिया। वह ऐसा घर है जिसे खरीदने की मेरी खुद की हैसियत कभी नहीं हो पाती।

विनीता– सेलेब्रिटीज़ के साथ एक ही मंच पर बैठना कैसा लगता है?

धनराज– बहुत अच्छा! जब हम राष्ट्रपति से मिले तब यह महसूस हुआ कि हम कितने खास हैं। हॉकी ही है जिसके चलते हर जगह प्रतिष्ठा मिली।

SCERT TELANGANA

सुनिए–बोलिए

1. साक्षात्कार पढ़कर आपके मन में धनराज पिल्लै की कैसी छवि उभरती है? वर्णन कीजिए।
2. किन विशेषताओं के कारण हॉकी भारत का राष्ट्रीय खेल माना जाता है?
3. "यह कोई ज़रूरी नहीं कि शोहरत पैसा भी साथ लेकर आए" – क्या आप धनराज पिल्लै की इस बात से सहमत हैं? बताइए।

पढ़िए

1. 'मेरी माँ ने मुझे अपनी प्रसिद्धि को विनम्रता से सँभालने की सीख दी है'– धनराज पिल्लै की इस बात का क्या अर्थ है?
2. धनराज पिल्लै को अपने जीवन में किन–किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा? साक्षात्कार पढ़कर बताइए ।

लिखिए

1. ध्यानचंद को हॉकी का जादूगर कहा जाता है। क्यों? पता लगाइए।
2. धनराज पिल्लै ने ज़मीन से उठकर आसमान का सितारा बनने तक की यात्रा तय की है। लगभग सौ शब्दों में इस सफ़र का वर्णन कीजिए।
3. इस साक्षात्कार से आपको क्या सीख मिलती है?
4. (क) अपनी गलतियों के लिए माफ़ी माँगना आसान होता है या मुश्किल?
   (ख) क्या आप और आपके आसपास के लोग अपनी गलतियों के लिए माफ़ी माँग लेते हैं?
   (ग) माफ़ी माँगना मुश्किल होता है या माफ़ करना? अपने अनुभव के आधार पर लिखिए।

शब्द भंडार

1. पिल्लै अभी भी मुंबई की लोकल ट्रेनों में <u>सफ़र</u> करता है। (रेखांकित शब्द का पर्याय लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए।)

SCERT TELANGANA

2. मैं अपने दोस्तों और अपने परिवार की बहुत <u>कद्र</u> करता हूँ। (रेखांकित शब्द का पर्याय लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए।)
3. पाठ से पाँच युग्म शब्द चुनकर वाक्य प्रयोग कीजिए।
4. पाठ में कई अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग हुआ है। उनके अर्थ हिंदी और अपनी मातृभाषा में जानो। पाँच शब्दों का वाक्य में प्रयोग करें।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

■ अपने किसी पसंदीदा खिलाड़ी का साक्षात्कार लेने के लिए प्रश्नावली तैयार करें।

प्रशंसा

■ खेल में हार–जीत लगी रहती है। खेलों से हमें जीवन में काम आनेवाली कैसी सीख मिलती है?

भाषा की बात

1. नीचे कुछ शब्द लिखे हैं जिनमें अलग–अलग प्रत्ययों के कारण बारीक अंतर है। इस अंतर को समझाने के लिए इन शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए–

प्रेरणा	प्रेरक	प्रेरित
संभव	संभावित	संभवतः
उत्साह	उत्साहित	उत्साहवर्धक

2. **तुनुकमिज़ाज** शब्द **तुनुक** और **मिज़ाज** दो शब्दों के मिलने से बना है। **क्षणिक**, **तनिक** और **तुनुक** एक ही शब्द के भिन्न रूप हैं। इस प्रकार का रूपांतर दूसरे शब्दों में भी होता है, जैसे–बादल, बादर, बदरा, बदरिया; मयूर, मयूरा, मोर; दर्पण, दर्पन, दरपन। शब्दकोश की सहायता लेकर एक ही शब्द के दो या दो से अधिक रूपों को खोजिए। कम-से-कम चार शब्द और उनके अन्य रूप लिखिए।

SCERT TELANGANA

3. **अनुमानित** शब्द **अनुमान** में **इत** प्रत्यय जोड़कर बना है। इत प्रत्यय जोड़ने पर अनुमान का **न** **नित** में परिवर्तित हो जाता है। नीचे–इत प्रत्यय वाले कुछ और शब्द लिखे हैं। उनमें मूल शब्द पहचानिए और देखिए कि क्या परिवर्तन हो रहा है–

प्रमाणित	व्यथित	द्रवित	मुखरित
झंकृत	शिक्षित	मोहित	चर्चित

इत प्रत्यय की भाँति **इक** प्रत्यय से भी शब्द बनते हैं और तब शब्द के पहले अक्षर में भी परिवर्तन हो जाता है, जैसे–**सप्ताह** + **इक** = **साप्ताहिक**। नीचे इक प्रत्यय से बनाए गए शब्द दिए गए हैं। इनमें मूल शब्द पहचानिए और देखिए कि क्या परिवर्तन हो रहा है–

मौखिक	संवैधानिक	प्राथमिक
नैतिक	पौराणिक	दैनिक

4. **बैलगाड़ी** और **घोड़ागाड़ी** शब्द दो शब्दों को जोड़ने से बने हैं। इसमें दूसरा शब्द प्रधान है, यानी शब्द का प्रमुख अर्थ दूसरे शब्द पर टिका है। ऐसे समास को तत्पुरुष समास कहते हैं। ऐसे छह शब्द और सोचकर लिखिए और समझिए कि उनमें दूसरा शब्द प्रमुख क्यों है?

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ का भाव अपने शब्दों में बता सकता/सकती हूँ। भावों से संबंधित बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. इस स्तर की गद्य सामग्री का भाव पढ़ कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. इस स्तर के गद्यांशों की व्याख्या करते हुए लिख सकता/सकती हूँ ।		
4. पाठ के शब्दों को अपनी बातचीत में प्रयोग कर सकता/सकती हूँ।		
5. अपने पसंदीदा खिलाड़ी का साक्षात्कार ले सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA